Semester- 5 MJC+MIC -9

Process of group Counselling

समूह परामर्श की प्रक्रियाएं

डॉ०अमर भारती सहायक प्राध्यापक N.D. कॉलेज

POSTER MAKER Poster Maker

समूह परामर्श की प्रक्रिया
(Process of Group Counselling)

समूह परामर्श प्रक्रिया का सामान्य रूप निम्नलिखित है—

(1) सर्वप्रथम परामर्शक समान प्रकार के प्रार्थियों का एक छोटा-सा समूह बनाता है। एक समूह में सामान्यत: 6 से 10 प्रार्थी होते हैं। समूह के निर्माण का आधार आयु, लिंग, व्यक्तित्व संरचना एवं समस्या का गत्यात्मक स्वरूप एवं लक्षण व गम्भीरता आदि कारक हो सकते हैं। इन कारकों में से किस पर बल दिया जाता है, यह परामर्शदाता द्वारा विभिन्न कारकों को दिये गये महत्व पर आधारित होता है।

(2) समूह परामर्श के दूसरे चरण में प्रार्थियों को परामर्श के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इनमें से कुछ परामर्शदाता प्रार्थी का पहले अलग परामर्श करके फिर सामूहिक परामर्श में प्रवेश कराते हैं। कुछ परामर्शदाता वैयक्तिक तथा सामूहिक परामर्श साथ-साथ चलाते हैं और कुछ परामर्शदाता बिना वैयक्तिक परामर्श के सीधे ही समूह परामर्श शुरू करा देते हैं।

(3) यह समूह परामर्श का तीसरा चरण है जिसमें परामर्शदाता प्रार्थियों के बीच में इस प्रकार बैठता है कि समस्त प्रार्थी समान रूप से उसकी नजर में रहें तथा उनकी बातचीत सुन सकें। अब परामर्शदाता ऐसा उपयुक्त वातावरण विकसित करता है कि प्रत्येक प्रार्थी अपनी बात बिना किसी अवरोध के व्यक्त कर सकें। प्रार्थियों को विचार-विनिमय की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। प्रारम्भ में प्रार्थी को अपनी बात कहने में उलझन व कठिनाई होती है, परन्तु धीरे-धीरे वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने लगता है। प्रत्येक प्रार्थी अपनी समस्या का वर्णन करता है फिर सभी अन्य प्रार्थी उस समस्या के प्रति अपने विचार, सुझाव व दृष्टिकोण प्रकट करते हैं। प्रार्थियों को इस विचार-विमर्श के लिए प्रोत्साहित करने, इसमें आई कठिनाइयों का निवारण करने तथा आवश्यकतानुसार उनकी सहायता करने का कार्य परामर्शदाता का रहता है।

सामूहिक विचार-विनिमय की प्रक्रिया सप्ताह में एक बार या दो बार सम्पन्न होती है। आपस में मिलने का यह क्रम लम्बे समय तक चलता रहता है।

(4) जब प्रार्थी सभी की बातें सुनता है, तो इससे उसे अपनी समस्या भयावह, घृणित तथा विचित्र नहीं प्रतीत होती। प्रार्थी की एकान्तता कम हो जाती है, उसके लिए एक उपयुक्त सामाजिक वातावरण उपलब्ध हो जाता है जो उसके सामाजिक कौशल में वृद्धि करता है। समूह के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श व क्रिया करने से इच्छाओं, विचारों, भावनाओं, तनाव, चिन्ता, हीनता, संवेग आदि का प्रकाशन होने से प्रार्थी को आराम मिलता है और अन्तर्दृष्टि भी विकसित होती है। फलत: व्यक्ति अपनी बुद्धि व तर्क का स्वाभाविक व उपयुक्त तरीके से प्रयोग करना सीख जाता है। यह समूह परामर्श का चौथा चरण है।

(5) पाँचवें चरण तक आते-आते परामर्शदाता प्रार्थी के विचार-विमर्श के आधार पर उनके उन मानसिक संघर्षों को जान जाता है जो समस्या की उत्पत्ति के मूल कारण हैं और इसी ज्ञान के आधार पर उनकी सहायता एवं परामर्श करता है।

समूह परामर्श के लाभ (Advantages of Group Counselling)—इस परामर्श के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं—

(1) समूह परामर्श का पहला लाभ यह है कि इसके द्वारा कई व्यक्तियों को एक साथ परामर्श सेवा देना सम्भव हो पाता है।

(2) समूह परामर्श में अनेक व्यक्तियों को एक साथ रखकर परामर्श दिया जाता है जिसके कारण समय की बचत होती है। यदि अलग-अलग इन सभी व्यक्तियों को परामर्श

दिया जाता है तो इनका सम्पूर्ण समय बहुत ही अधिक हो जाता है अतः इस परामर्श के द्वारा समय की बचत होती है।

(3) इसका एक लाभ यह भी है कि कई सेवार्थी (Client) एक साथ मिलकर परामर्श सेवा का मूल्य अदा करते हैं जिसके कारण सभी के पैसे की बचत होती है। अगर इन सबका वैयक्तिक परामर्श दिया जाता है तो प्रत्येक Client को बहुत अधिक मूल्य देना पड़ता है।

(4) समूह परामर्श के द्वारा Clients का परामर्श व्यावहारिक जीवन के सिद्धान्त के आधार पर होता है। इसलिए इसके द्वारा किया गया परामर्श व उपचार सफल और स्थायी होता है।

(5) सेवार्थी या प्रार्थी समूह में विचार-विमर्श द्वारा एक-दूसरे की बात सुनता है जिससे उसकी स्वयं की समस्या की अतिरंजिता में कमी आती है।

(6) प्रार्थी की एकरसता की भावना में कमी आती है।

(7) प्रार्थी की सामाजिकता, सहयोग व मिलनसारिता में वृद्धि होती है।

(8) सामाजिक वातावरण के प्रति रुचि विकसित होती है।

(9) समूह परामर्श के अन्तर्गत प्रार्थी को अभिव्यक्ति का उपयुक्त अवसर व वातावरण मिलता है।

(10) समूह परामर्श के द्वारा Client में आत्म-निर्भरता की भावना को विकसित किया जाता है जो सफल समायोजन के लिए आधारशिला का काम करता है।

(11) समूह परामर्श के द्वारा आत्मबोध एवं अन्तर्दृष्टि का विकास होता है।

समूह परामर्श के अलाभ (Disadvantage of Group Counselling)—

(1) समूह परामर्श के द्वारा अनेक Clients को परामर्श एक साथ दिया जाता है इसलिए उन पर समुचित रूप से परामर्शक का ध्यान नहीं जाता है जिसका बुरा असर परामर्श प्रक्रिया पर पड़ता है।

(2) सामान्यतः ऐसे कुशल परामर्शकों का अभाव पाया जाता है जो विविधतायुक्त समूह की समस्याओं को सुलझाने की प्रविधियों से अवगत हों।

(3) समूह परामर्श गम्भीर मनोविकृत समस्याओं से ग्रस्त व्यक्ति के लिए प्रभावकारी नहीं होता है।

(4) समूह में व्यक्ति परामर्शदाता का केन्द्रबिन्दु नहीं होता है और न ही इसकी क्रियाएँ उस पर केन्द्रित होती हैं, अतः उसकी अभिप्रेरणात्मक प्रक्रिया बाधित होती है।

(5) परामर्श व निर्देशन की आधारभूत मान्यता वैयक्तिक भिन्नताएँ हैं और समूह परामर्श इसकी उपेक्षा करता है।

(6) समूह परसमर्श के अन्तर्गत Client का बहुआयामी अध्ययन, निरीक्षण एवं परीक्षण नहीं हो पाता है।